प्रमाणपत्र

मैं यह प्रमाणित करता हूँ कि श्री रामानन्द गणेशराम तोष्णीवाल ने शिवाजी विश्वविद्यालय की एम्. फिल्. (हिन्दी) उपाधि के लिये प्रस्तुत लघु शोध-प्रबन्ध "'रामचरितमानस' में मानवेतर प्राणि-सृष्टि का चित्रण" मेरे निर्देशन में सफलता पूर्वक पूरे परिश्रम के साथ पूरा किया है। इसमें उनके निष्कर्ष मौलिक हैं, जो उनके गहन अध्ययन एवं चिन्तन के परिचायक हैं। श्री रामानन्द गणेशराम तोष्णीवाल के प्रस्तुत शोध-कार्य के बारेमें मैं पूर्णतया सन्तुष्ट हूँ। सम्पूर्ण लघु शोध-प्रबन्ध को आरम्भ से अन्त तक पढ़कर ही मैं यह प्रमाणपत्र दे रहा हूँ।

(प्राचार्य शरद कणबरकर)
शोध-निर्देशक
हिन्दी विभाग
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर।

दिनांक 28 / 5 / 1993.

28-5-93

Head, Hindi Dept.
Shivaji University,
Kolhapur - 416 004.

प्रख्यापन

मैंने "'रामचरितमानस' में मानवेतर प्राणि-सृष्टि का चित्रण" यह लघु शोध-प्रबन्ध प्रा. शरद कणबरकरजी के निर्देशन में शिवाजी विश्वविद्यालय की एम्. फिल्. (हिन्दी) उपाधि के लिये पूरा किया है। मेरा यह शोध-कार्य मौलिक है। यह लघु शोध-प्रबन्ध अन्य किसी विश्वविद्यालय की उपाधि के लिये मैंने प्रस्तुत नहीं किया है।

Ramanand

(रामानन्द गणेशराम तोष्णीवाल)

शोध-छात्र

कोल्हापुर

दिनांक 28 /5/ 1993

अनुक्रमणिका

		पृष्ठ क्रमांक
	प्राक्कथन	1
प्रथम अध्याय	तुलसीदास-व्यक्तित्व एवं कृतित्व	5
द्वितीय अध्याय	प्रकृति और मानव	30
तृतीय अध्याय	'रामचरितमानस' में वर्णित प्राणि-सृष्टि का प्रसंगानुसार निर्देश	47
चतुर्थ अध्याय	मानवेतर प्राणियों का चित्रण	82
पंचम अध्याय	उपसंहार	151
■ परिशिष्ट	1) संदर्भ ग्रन्थ-सूची	158
	2) सहायक ग्रन्थ-सूची	162

प्राक्कथन

प्राक्कथन

गोस्वामी तुलसीदास हिन्दी साहित्य-गगन के जाज्वल्यमान नक्षत्र हैं। वे एक महान् स्रष्टा एवं जीवन-द्रष्टा कवि हैं। उन्होंने अपने काव्य-कौशल से मध्ययुगीन भारत की सम्पूर्ण चेतना को काव्यमयी वाणी दी है। उनकी अलौकिक तूलिका से निर्मित राम-काव्य अपनी उन्नति की चरम सीमा पर पहुँच गया है। उनकी प्रत्येक रचना राम-कथा का संस्पर्श करती है। उनकी समस्त रचनायें शास्त्रों, उपनिषदों एवं सिद्धांतों के सार से ओत-प्रोत हैं।

गोस्वामी तुलसीदास प्रणीत 'रामचरितमानस' विश्व की श्रेष्ठ साहित्यिक कृति है। यह हमारी सभ्यता एवं संस्कृति के उच्च आदर्श का इतिहास है।इसमें भक्ति-रस का अखण्ड प्रवाह बहता है, जो जीवन को पवित्र कर देता है। 'रामचरितमानस' उदात्त जीवन-मूल्यों का एहसास कराता है एवं जीवन के नये शिखरों को छूने की ललक जगाता है। यह सात्त्विकता एवं तात्त्विकता, दोनों गुणों से ओत-प्रोत है।

'रामचरितमानस' के प्रति मेरी आस्था बचपन से ही रही है। परम्परा से हमारा परिवार राम-भक्त है। अत: 'रामचरितमानस' का थोड़ा-बहुत पठन-पाठन घर पर चलता ही रहता था, कभी 'अखण्ड रामचरितमानस' के पारायण के रूप में तो कभी 'सुन्दरकाण्ड' के पाठ के रूप में। लेकिन मुझे सर्वाधिक आकर्षित किया 'रामलीला' ने। 'रामलीला' में मर्यादा पुरुषोत्तम राम का चरित्र प्रस्तुत किया जाता था और इसका आधार 'रामचरितमानस' ही था। इसमें 'रामचरितमानस' के दोहे-चौपाइयों का साज-बाज के साथ सस्वर गायन किया जाता था और श्रोता भाव-विभोर हो कर भक्ति रस में डूब जाते थे।

यह, वह जमाना था, जब ग्राम्यांचलों में रामलीला को लोकधर्मा-मंच की स्वीकृति प्राप्त थी। इसे अनुष्ठान और यज्ञ जैसा महत्त्व दिया जाता था और यह जन-जन में लोकप्रिय थी। यह धर्म एवं अध्यात्म से जुड़ी हुई थी और इसका सम्बन्ध कला से नहीं; भक्ति से था। इसमें गोस्वामीजी के मंगल-ग्रन्थों के आधार पर सोहर (बधाई) गीत, बन्ना-गीत आदि भी यथा-स्थान पर गाये जाते थे। रामलीला का जन्म अवध से माना जाता है और इसके प्रणेता गोस्वामी तुलसीदास ही माने जाते हैं।

उस समय रामलीला में हमारे लिये सर्वाधिक आकर्षण के केन्द्र थे बन्दर व भालू। ये अपनी विभिन्न मुख-मुद्राओं, भाव-भंगिमा, वेशभूषा, चाल-ढाल और उछल-कूद से जीवन की सजीवता का निर्माण कर देते थे। कालान्तर में मेरे मन में जिज्ञासा के भाव अंकुरित होने लगे कि:

1) 'रामचरितमानस' जैसी श्रेष्ठ साहित्यिक कृति के महान् स्रष्टा गोस्वामी तुलसीदास का स्वयं का जीवन कैसा रहा होगा? किन परिस्थितियों के कारण उनकी सृजनात्मक चेतना को दिशा मिली एवं उसका विकास हुआ जो उनकी कृतियों में परिलक्षित होता है?

2) प्रकृति और मानव का क्या सम्बन्ध रहा है? क्या तुलसीदास भी प्रकृति-प्रेमी थे? क्या उन्होंने अन्य प्राचीन भारतीय साहित्यकारों की भाँति प्रकृति-सौन्दर्य का चित्रण 'रामचरितमानस' में किया है?

3) 'रामचरितमानस' में मानवेतर प्राणि-सृष्टि का प्रसंगानुसार चित्रण किस प्रकार किया गया है?

4) गोस्वामीजी ने राम, लक्ष्मण, भरत जैसे महान् पात्रों के साथ ही मानवेतर प्राणियों की रचना क्यों की? इनकी रचना के पीछे उनका क्या उद्देश्य रहा है? वे इसके द्वारा क्या सन्देश देना चाहते हैं?

इन प्रश्नों के उत्तर खोजने एवं गोस्वामीजी के निहित दृष्टिकोण को अभिव्यक्त करने का मैंने इस लघु शोध-प्रबन्ध में विनम्र प्रयास किया है। प्रस्तुत लघु शोध प्रबन्ध का विषय है '' 'रामचरितमानस' में मानवेतर प्राणि-सृष्टि का चित्रण।''

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबन्ध पाँच अध्यायों में विभाजित है।

'प्रथम अध्याय' में गोस्वामी तुलसीदास के जीवन-वृत्त, व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर विचार किया गया है। इसमें उन परिस्थितियों का भी विवेचन किया गया है जिनसे उनकी चेतना जागृत हुई, जिसका प्रतिफलन उनकी रचनाओं में हुआ है।

'द्वितीय अध्याय' में प्रकृति और मानव के शाश्वत सम्बन्ध, भारत की अरण्य-संस्कृति, प्रकृति-पूजा, प्रकृति-सौन्दर्य में स्रष्टा की खोज, भारतीय साहित्य में प्रकृति-वर्णन, तुलसीदास का प्रकृति-प्रेम, 'रामचरितमानस' में प्रकृति-वर्णन, भोगवादी दृष्टिकोण से प्रकृति का विनाश, आदि विषयों का विवेचन किया गया है।

'तृतीय अध्याय' के अंतर्गत 'रामचरितमानस' में प्राणि-सृष्टि का प्रसंगानुसार वर्णन करते हुये दास्य-भक्ति, परमार्थ के लिये प्राणोत्सर्ग, सच्ची-मित्रता, चारित्रिक दृढ़ता, राम-कृपा का चमत्कार, सत्संग की महिमा, सेवा से देवत्व-प्राप्ति तथा अविरल एवं निष्काम भक्ति का प्रतिपादन किया गया है। इसमें 'आत्मवत् सर्व भूतेषु' के सिद्धान्त का अनुसरण करते हुये पशु, पक्षी, वन्य जीव, वनस्पति एवं सम्पूर्ण चराचर सृष्टि के प्रति आत्मीयता का सम्बन्ध स्थापित किया गया है।

'चतुर्थ अध्याय' में मानवेतर प्राणियों का चित्रण किया गया है। मानवेतर प्राणियों की परिसीमा में राक्षस, वानर, भालू, पशु, पक्षी, भ्रमर, वृक्ष, लताओं, जलचर प्राणियों,

नदियों, तीर्थराज प्रयाग, पर्वत, पृथ्वी, पुष्पक विमान एवं चारों वेदों को समाविष्ट किया गया है। इसमें आसुरी शक्तियों के पराभव, अभिमानी का पतन, तन्त्र-साधना एवं वाममार्गीय हिंसा की निरर्थकता, तामसी आहार से तमोगुण का प्राबल्य, सामाजिक सुव्यवस्था के लिये सच्चरित्रता की आवश्यकता, विधवा-विवाह का समर्थन, एक पत्नीव्रत की स्थापना, अनियन्त्रित 'काम' से समाज-जीवन को हानि, समरांगण में वीरगति से मोक्ष-प्राप्ति, सगुण-भक्ति, दास्य-भक्ति, निष्काम कर्मयोग, पुनर्जन्म का सिद्धान्त, परमार्थ के लिये प्राणोत्सर्ग ही श्रेष्ठ धर्म एवं मोक्ष का सुलभ साधन प्रपत्ति (शरण) आदि विषयों का विवेचन किया गया है। इसमें शैव-मत, वैष्णव-मत तथा सगुण-निर्गुण के समन्वय का भी प्रतिपादन किया गया है। इसमें मानवेतर प्राणियों के जीवन के प्रसंगों के आधार पर मानव-चरित्र की सूक्ष्म से सूक्ष्म रेखा पर प्रकाश डाला गया है।

'पंचम् अध्याय' में उपसंहार है। यह समस्त लघु शोध-प्रबन्ध का सार एवं समापन है।

प्रबन्ध के अन्त में परिशिष्ट दिया गया है। परिशिष्ट के पूर्वार्ध में संदर्भ ग्रन्थ-सूची एवं उत्तरार्ध में सहायक ग्रन्थ-सूची दी गई है। साथ में ग्रन्थ का प्रकाशन एवं संस्करण भी दिया गया है।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबन्ध के प्रणयन में जिन विद्वानों के ग्रन्थों एवं शोध-कार्य की बहुमूल्य सामग्री का प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष उपयोग किया गया है, उनके प्रति हार्दिक आभार प्रकट करना मैं अपना कर्तव्य समझता हूँ।

मैं, श्रद्धेय गुरुवर्य प्रा. शरद कणबरकरजी का अतीव कृतज्ञ हूँ, जिन्होंने इस विषय में सर्वदा अपने निर्देशों एवं सत्परामर्श आदि से मुझे उपकृत किया है। वस्तुतः यह लघु शोध-प्रबन्ध उनके मार्गदर्शन एवं सतत प्रेरणा का ही फल है। उनका व्यक्तित्व विपुल ज्ञान एवं सहज प्रेषणीयता का समुच्चय है। ज्ञानार्जन एवं वितरण उनके जीवन का परम लक्ष्य है। साथ ही, सौ. विमल कणबरकरजी के प्रति भी मैं आभार प्रकट करता हूँ, जिनका प्रेरक प्रोत्साहन मुझे सदा मिलता रहा है। मुझे विश्वास है कि आप दोनों का स्नेहपूर्ण आशीर्वाद सदा मेरे साथ रहेगा।

आदरणीय गुरुवर्य डा. व्ही. के. मोरे, डा. के. पी. शाह, डा. व्ही. व्ही. द्रविड, प्रा. रजनी भागवतजी, प्रा. एम्. के. तिवले, प्रा. के. जे. वेदपाठक, प्रा. मुजावर, विवेकानन्द महाविद्यालय के प्राचार्य डी. ए. पाटील, प्रा. मेजर ए. एम्. मुजावर, शाहू कॉलेज के प्रा. संभाजी पाटील एवं कन्या महाविद्यालय इचलकरंजी के डा. ए. एम्. सुतार का मैं ऋणी हूँ, जो समय-समय पर कृपापूर्वक मेरा मार्ग-दर्शन करते रहे हैं। इन सभी विद्वान् सारस्वतों के प्रति मैं

असीम श्रद्धा व्यक्त करता हूँ। साथ ही, शिवाजी विश्वविद्यालय के ग्रन्थपाल डा. जे. बी. जाधव एवं ग्रन्थालय में कार्यरत उनके सभी सहयोगियों के प्रति अपना आभार व्यक्त करता हूँ।

इस लघु शोध-प्रबन्ध का सुचारू रूप से टंकलेखन करने वाले श्री. अशोक निंबालकर एवं आर्टिस्ट श्री. राजेन्द्र उरणे तथा रविन्द्र शहा इचलकरंजी के प्रति भी मैं अपना आभार प्रकट करता हूँ।

अन्त में, अपने परिवार-जनों के स्नेह का स्मरण भी आवश्यक समझता हूँ, जिनके सहयोग के बिना यह कार्य संभव ही नहीं था।

इसके साथ ही मैं अपना यह लघु शोध-प्रबन्ध विनम्र भाव से आपके अवलोकनार्थ प्रस्तुत करता हूँ।

Ramanand

कोल्हापुर (रामानन्द गणेशराम तोष्णीवाल)

दिनांक - 28-5-1993 शोध-छात्र

■ □ ■